ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

डॉ० गंगाराम राजी के कथा साहित्य में वृद्धावस्था की समस्याएं

सुनीता
शोधार्थी (हिंदी विभाग) PhD
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक
Email-sunita124001@gmail.com
शोध निर्देशक – डॉ० रामरती

शोधसार

डॉ० गंगाराम राजी हिमाचल प्रदेश से हिंदी के वरिष्ठ कथाकार हैं। इनके रचनाकर्म में सामाजिक सरोकारों के प्रति प्रतिबद्धता दिखाई देती है। इनका कथा साहित्य हमारे समय और समाज का ऐसा आईना है जिसमें रोजमर्रा के देखे-सुने, जिए-भोगे अनुभवों का प्रतिबिंब दिखाई देता है। आज का बदलता परिवेश मनुष्य के संघर्ष को ने केवल बढ़ा रहा है बल्कि उसका मन, रिश्ते, संवेदना सभी आहत दिखाई देते हैं। ऐसा ही कुछ आज के परिवेश में हमारे बुजुर्गों के साथ हो रहा है। गंगाराम राजी यथार्थवादी व सामाजिक चेतना से परिपूर्ण कथाकार हैं इसलिए उन्होंने अपनी रचनाओं में वृद्धावस्था की समस्याओं को स्थान दिया है।

मूल शब्द: परिवेश, सामाजिक समस्याएं, संवेदना, वृद्धावस्था, तिरस्कार, अवसाद

प्रस्तावना

'वृद्धावस्था' शब्द वृद्ध+अवस्था से बना हुआ है। वृद्ध का शाब्दिक अर्थ है-बढ़ा हुआ, पका हुआ, परिपक्व अवस्था, हालत, दशा। वृद्धावस्था का अर्थ है-बुढ़ापा"।[i] वृद्धावस्था अंग्रेजी के old age शब्द का पर्यायवाची है। मुक्त ज्ञानकोष विकिपीडिया में वृद्धावस्था को इस प्रकार परिभाषित किया है "वृद्धावस्था या बुढ़ापा जीवन की इस अवस्था को कहते हैं जिसमे उम्र मानव जीवन की औसत काल के समीप या उससे अधिक हो जाती हैं। वृद्ध लोगों को रोग लगने की अधिक संभावना होती है। उनकी समस्याएं भी अलग होती हैं वृद्धावस्था एक धीरे-धीरे आने वाली अवस्था है जो कि स्वाभाविक व प्राकृतिक घटना है"।[ii]

इतिहास इस बात का साक्षी है कि प्राचीन काल में वृद्धों की स्थिति अत्यंत उन्नत एवं सम्मानीय रही है। उनका समाज एवं परिवार में अलग वर्चस्व था। परिवार की समस्त बागडोर उनके हाथों में हुआ करती थी। ये परिवार के सदस्यों को एक धागे में बांधे रखते थे। परंतु आज भौतिकवादी युग में बुजुर्गों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। परिवार से सामंजस्य न कर पाना,

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

अलगाव पृथक्कीकरण की अनुभूति, वृद्धाश्रमों में रखा जाना या घर से निकाल देने जैसी समस्याएं देखने को मिलती है।

ऐसे भी कई बुजुर्ग हैं जिनके बच्चे देश से बाहर या घर से काफी दूर रहते हैं। अभिभावकों के लिए मासिक खर्च भेज कर ही अपने कर्तव्य को पूरा कर लेते हैं। वे यह नहीं समझते कि पैसा केवल भौतिक आवश्यकताएं पूरी कर सकता है। पैसे से भावनाओं का मोल नहीं लगाया जा सकता। घर में अकेले जीते हुए अभिभावक अवसाद ग्रस्त हो जाते हैं। 'आदमी?' कहानी में गंगाराम राजी ने इसी समस्या को दिखाया है। कहानी में रती देवी नाम की एक वृद्ध महिला है जिसके दोनों बेटे विदेश में काम करते हैं। कभी भी अपने मां से मिलने नहीं आते। कभी-कभी फोन पर बात कर लेते हैं। यह वही मां है जिसने अपने पति के बिना छोटे-छोटे बच्चों को मेहनत करके पाला है- "रति देवी ने हिम्मत नहीं हारी, मेहनत करनी आरंभ कर दी। रात-दिन एक करके दूसरों के घरों में बर्तन साफ करती दूसरों के कपड़े धोती उसने वह हर काम जो वह कर सकती थी किया। वह दसवीं तक तो पढ़ीं थी। सायं को आस-पास के लड़कों को ट्यूशन भी कराती और अपने बच्चों को भी पढ़ातीरहती।"[iii] मां मजदूरी करती रही और दोनों लड़के मेहनत करके आगे बढ़ते गए। दोनों इंजीनियर बन गए। एक के बाद एक अमेरिका चले गए। वहीं पर शादी कर ली। रती देवी इतनी खुश हुई कि सारे मोहल्ले में लड्डू बांटे थे। वह सब से कहती-"मेरे सुख के दिन लौट आए हैं, अब मैं आराम करूंगी, अब बच्चे दूसरों के घरों में झूठे बर्तन साफ करने नहीं देंगे। परमात्मा ने मेरे दिन फेर दिए हैं।"[iv]

लड़के शुरू शुरू में बड़े-बड़े खत लिखते लेकिन धीरे-धीरे खत छोटे होते गए और कुछ समय बाद बिल्कुल बंद। लेकिन पैसे भेजते रहे फिर कभी-कभी फोन करने लगे। "बच्चों का फोन अब तो आता ही नहीं। उस मोबाइल पर घंटी कभी बस्ती ही नहीं परंतु वह रोज चार्ज करती इस विश्वास है कि आज फोन की घंटी बजेगी जरुर बजेगी, कम से कम छोटे का फोन तो आएगा ही।"[v] धीरे-धीरे बच्चों ने अपनी मां से संपर्क करना बंद कर दिया मां रोज फोन का इंतजार करती। इन सब बातों से वह इतनी आहत हुई कि अपना मानसिक संतुलन खो बैठी और एक दिन छत से नीचे गिर कर मृत्यु को प्राप्त हो गई।

माता पिता अपने बच्चों की बचपन की जरूरतों से लेकर करियर निर्माण और शादी विवाह की जिम्मेदारी वहन करते हुए अपनी जरूरतों को नजरअंदाज कर देते हैं। यह सोच कर कि बच्चे ही उनके बुढ़ापे का सहारा बनेंगे लेकिन आज वही संतान उनके बुढ़ापे में उनसे छुटकारा पा लेना चाहती हैं। माता-पिता उन्हें अपनी ऐसो आराम भरी जिंदगी में बाधक लगते हैं। अपराधों को छोड़

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

दें तो अधिकतर भव्य घर के बुजुर्गों की उपेक्षा और तिरस्कार में कोई कसर नहीं छोड़ती।

'ऋण नहीं उतार पाऊंगा' कहानी में गंगाराम राजे ने इसी तरह की समस्या को चित्रित किया है। इस कहानी में पिता की मृत्यु के पश्चात बेटे के पश्चाताप को दिखाया गया है। जिस पिता ने अपना जीवन अपने बेटे की जरूरतों को पूरा करने में लगा दिया वही बेटा बुढ़ापे में अपने पिता का सहारा नहीं बन सका। पत्नी के व्यवहार ने उसे अपने पिता की सेवा से विमुख कर दिया। "याद आने लगा बापूजी का मेरे लिए काम करना। वे मेरे से चोरी-छिपे मजदूरी का काम करते थे। कभी लोगों की बोरियां उठाते, कोई भी काम जो नहीं मिल जाए करते, इसलिए कि मुझे कोई दिक्कत न हो। अब सोचता हूं कि मुझे अचानक स्वर्ग सिधारने पर जो चोट उन्हें लगी वह मुझे नहीं लगी थी क्योंकि उस समय मेरी उम्र यह निर्णय करने की नहीं थी कि मां कहां गई मां क्या होती है। अब ख्याल आता है कि बापू चाहते तो वे दूसरी शादी आसानी से कर सकते थे। परंतु उन्होंने शादी नहीं की। कारण मैं ही रहा हूंगा।"[vi]

"पत्नी के कहने पर मैं बापूजी को साथ नहीं रख सका। वे इस उम्र में भी अपने थोड़े से खेतों की देखरेख कर अपना ग्रामीण जीवन यापन करते हुए संघर्षरत रहे। उनकी झुकी कमर वाला कमजोर शरीर, देहात किसान का साधारण पहनावा, उनका भोला भाला कई झुर्रियों को रेखांकित करता चेहरा अभी भी मेरे सामने आ खड़ा हो रहा है। इकलौता पुत्र होने पर वे पुत्र का सुख नहीं भूल पाए।"[vii]

वृद्धों के संदर्भ में गांव की अपेक्षा शहरों की स्थिति बहुत सोचनीय है। कई संपन्न परिवारों के बुजुर्ग तो वृद्धाश्रम की शरण ले रहे हैं या उन्हें वृद्ध आश्रम में धकेल दिया जाता है। बुजुर्ग व्यक्तियों को अपने पोते-पोतियों से अत्यधिक लगाव होता है लेकिन स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतें होने के कारण बहुएं अपने बच्चों को दादा-दादी के पास जाने से रोक देती है। बुजुर्ग घर में हंसते हुए भी डरते हैं। 'ठौर कहां' कहानी में बुजुर्ग रोशन को भी यह सब सहना पड़ता है। रोशन जिसकी पत्नी युवावस्था में ही भगवान को प्यारी हो गई थी। लेकिन उसने अपने बच्चों को मां की कमी कभी भी महसूस नहीं होने दी। बड़े लड़के को नौकरी मिल गई छोटा लड़का बिजनेस करने लगा। विवाह के पश्चात दोनों भाई अलग रहने लगे। "घर में रोशन की कोई नहीं सुनता था। अब तो उसकी स्थिति एक झाड़ू की तरह हो गई थी। काम लेने के बाद उसे एक कोने में इस तरह से रखते हैं कि उस पर किसी की नजर न पड़े और जब जरूरत पड़े तो उसका उपयोग तुरंत करके उसे अपने स्थान पर रख देते हैं।[viii] रात के समय रोशन को कभी-कभी खांसी आने लगती है। बहू ने बच्चों को रोशन से दूर रखना शुरू कर दिया। रोशन को समझ

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

नहीं आ रहा था कि बच्चे उसके पास खेलने क्यों नहीं आते। एक दिन पोते ने अपने दादा को बता ही दिया कि "मम्मी कहती है दादू के पास मत जाना बहुत बुरी बीमारी है दादू को तो टीबी बीमारी।"[ix]

बस फिर क्या था। रोशन बहुत कुछ सह लेता था अब उससे जब पोतों को भी दूर करने का षड्यंत्र रचा जाने लगा तो उससे रहा नहीं गया उसने जल्दी से पांव में जूते डाले और घर से निकल गए। उसे जाते हुए बहू देखती रही उसने कुछ नहीं पूछा कहां जा रहे हो, क्या कर रहे हो, वह चलता गया बहू द्वारा न पूछने की चोट भी उसे चुभने लगी थी। अब इस घर में उसकी ठौर कहां.... वह गया और पहुंच गया शहर के वृद्धश्रम में।"[x]

'पहाड़ों की धूप' कहानी में भी हंसने की वजह से पोते गणेश को उसकी दादी कला के पास जाने नहीं दिया जाता। "उसे गणेश के रोने की आवाज सुनाई दी दादी मां.... दादी मां.... वह रुक गई तभी उसके कानों में बहू के कर्कश शब्द सुनाई दिए उसे जाने दे.... उसे खांसी आती है। उसे जाने दे.... और उसे लगा की बहू ने उसे एक आध झापड़ भी जड़ ही दिया हो.....।"[xi]

पहले घर के बुजुर्ग परिवार को जोड़कर रखते थे। बड़े बूढ़े की बात का मान रखा जाता था लेकिन आज भौतिकता वादी युग में बच्चे बड़े होने के पश्चात माता-पिता की बात नहीं सुनते। जिसकी वजह से पारिवारिक विघटन देखने को मिलता है। जिसका दुष्परिणाम कहीं ना कहीं बुजुर्ग माता-पिता को ही झेलना पड़ता है। बेटा बहू अपने स्वार्थ यानी बच्चों के लालन-पालन के लिए माता-पिता को बांट लेते हैं। जिस उम्र में एक दूसरे के साथ की सबसे ज्यादा आवश्यकता होती है उसी समय इन्हें अलग-अलग रहने पर मजबूर कर दिया जाता है। गंगाराम राजी ने भैरों 'कभी नहीं मारा' उपन्यास में इसी समस्या को चित्रित किया है।

केशव ने अपनी जमीन बेच कर व पत्नी के गहने गिरवी रख कर अपने बेटों को पढ़ाया लिखाया। दोनों पुत्र बड़े अधिकारी बन गए। दोनों ने अपनी इच्छा से विवाह भी कर लिया। केशव व उसकी पत्नी फिर भी खुश थे। दोनों बेटों ने अपने बच्चे रखने के लिए माता-पिता को शहर में बुला लिया। बड़े बेटे ने मां को अपने पास रख लिया और छोटे बेटे ने पिता को। केशव और उसकी पत्नी को अलग तो रहना पड़ ही रहा था साथ ही बहुओं का दुर्व्यवहार भी उन्हें सताने लगा। उनकी स्थिति घर में नौकरों जैसी बनी हुई थी। इन सब से तंग आकर केशव ने मन ही मन में वृद्धश्रम में रहने का फैसला कर लिया और अपनी पत्नी के पास जाकर साथ चलने के लिए कहा। जब पत्नी ने पूछा कि हम कहां जा रहे हैं तो केशव ने कहा "तुम चलती रहो मैं तुम्हें एक ऐसी जगह ले जा रहा हूं जहां हम जैसे और भी होंगे। जहां सब एक दूसरे के साथ अपना सुख-दुख बांटते हैं।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

जहां लोगों का अपना ही संसार है। वहां हम अपने में ही अपने जीवन के पल गुजारेंगे एक साथ, जहां हम अपने में स्वतंत्र होंगे, आज मैं तुम्हें उस जगह पर ले जा रहा हूं।"[xii]

वृद्धों के सम्मान का रिश्ता संपत्ति से भी जुड़ा हुआ है। यदि बुढ़ापे में उनके पास संपत्ति है तो उनके बच्चे संपत्ति के लिए उनकी सेवा करते हैं। अन्यथा उनकी उपेक्षा होती है। 'भंडाफोड़' कहानी में इसी सच को दिखाया गया है। बिहारी जब भी अकेला होता है तो उसे अपने बाप की याद आने लगती है। क्योंकि वह भी उस पड़ाव पर पहुंच चुका है जहां पर औलादे अपने मां-बाप की नहीं सुनती। बिहारी के बापू को पता था कि बेटे बहुओं को लालच देकर ही सेवा कराई जा सकती है। "बापू के पास एक ट्रंक था उसको वे एक बहुत बड़ा ताला लगाकर रखते थे और उसकी चाबी को अपने नारे के साथ बांध कर रखते थे। यह ट्रंक उनके कमरे में उनकी चारपाई के नीचे रहता जिसे वे प्रतिदिन देखते रहते थे। ऊपर से झाड़ पौंछ स्वयं ही करते रहते। किसी को उसे हाथ नहीं लगाने देते। हम चारों भाइयों हमारी पत्नियों को यहां तक कि हमारे बच्चों में सबको पता था कि इस ट्रंक में भारी रकम है।"[xiii] इसी ट्रंक में पड़े माल के कारण बेटे तो बेटे उनकी बहुएं बारी-बारी उनकी सेवा में कोई कमी नहीं छोड़ दी थी। बिहारी के बापू ने कह रखा था कि उसकी मृत्यु के पश्चात तेरह्वीं का क्रियाकर्म करने के पश्चात इस ट्रंक को खोल लेना और चारों भाई आपस में बांट लेना। बापू चल बसा तेरहवीं के दिन शाम के समय ट्रंक का ताला खोला गया तो उसमें चार बड़े-बड़े पत्थर रखे हुए थे। बिहारी यह देखकर हंस पड़ा और अपने बापू की समझदारी को सैल्यूट करने लगा। बड़ी ही रोचकता के साथ इस कहानी को पिरोया गया है। लेकिन इस कहानी के अतीत जितने भी वृद्धावस्था से संबंधित रचनाएं हैं उनमें भावुकता व संवेदना कूट-कूट कर भरी हुई है।

सार रूप में कहा जा सकता है कि गंगाराम राजी अपने कथा साहित्य में वृद्धावस्था की समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। आधुनिकीकरण और व्यक्तिवादी तानी परिवार और समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले बुजुर्गों की स्थिति को दयनीय बना दिया है। नई पीढ़ी के पास पुरानी पीढ़ी के लिए समय नहीं है सो वह घर में अकेला हो चला है। शहरों में स्थापित वर्धाआश्रम बुजुर्गों की दयनीय स्थिति का प्रमाण है। अपनी रचनाओं के माध्यम से गंगाराम राजी ने कोशिश की है कि घर परिवार में बुजुर्गों को पूरा मान-सम्मान मिले। आज हम जिस ऊंचाई पर खड़े हैं उसके पीछे माता-पिता का त्याग व संघर्ष है जिसे किसी भी संतान को भूलना नहीं है। बुजुर्गों को घर के सदस्यों से थोड़ा प्यार, सम्मान व थोड़ा समय चाहिए, इससे अधिक कुछ नहीं।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

संदर्भ सूची:

[i] संपादक कलिका प्रसाद, राजबल्लभ सहाय, मुकुंदी लाल श्रीवास्तव, वृहत हिंदी कोश, पृष्ठ 1083

[ii] https/hi.wikipedia.org/wiki/वृद्धावस्था

[iii] गंगाराम राजी, एक और मुक्ति वाहिनी, पृष्ठ 35, प्रथम संस्करण: 2014, अखिल भारती, दिल्ली

[iv] वहीं, पृष्ठ 35

[v] वहीं, पृष्ठ 36

[vi] गंगाराम राजी, उल्लू न बनाओ, पृष्ठ 111, प्रथम संस्करण: 2016, दिनमान प्रकाशन

[vii] वहीं, पृष्ठ 112

[viii] गंगाराम राजी, जीवन एक पहेली, पृष्ठ 76, प्रथम संस्करण: 2018, साहित्य प्रचारक, दिल्ली

[ix] वहीं, पृष्ठ 77

[x] वहीं, पृष्ठ 78

[xi] गंगाराम राजी, एक और मुक्ति वाहिनी, पृष्ठ 127, अखिल भारती, दिल्ली 2014

[xii] भैरव कभी नहीं मरा, गंगाराम राजी, पृष्ठ 198, प्रथम संस्करण 2014, नमन प्रकाशन

[xiii] गंगाराम राजी, सिंहावलोकन, पृष्ठ 54, प्रथम संस्करण 2011, नमन प्रकाशन

Copyright © 2020 Authors